माला के दाने

राजेन्द्र तिवारी

भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ
शफीक मेमोरियल
17-बी इन्द्रप्रस्थ एस्टेट
नई दिल्ली-110002

माला के दाने

नाटक

भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ
नयी दिल्ली-110 002

माला के दाने

नाटक

राजेन्द्र तिवारी

प्रकाशक :
भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ
शफीक मेमोरियल
17-बी, इन्द्रप्रस्थ एस्टेट
नयी दिल्ली-110 002

© भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ
पहला संस्करण 1989 : मूल्य : 5.00

मुद्रक :
त्यागी प्रिंटिंग प्रेस
त्रिलोकपुरी
दिल्ली-110 091

निवेदन

राष्ट्रीय एकता और अखंडता तथा साम्प्रदायिक भाईचारे को बनाये रखना आज हमारे देश की बहुत बड़ी जरूरत है। नयी शिक्षा नीति के तहत सक्रिय राष्ट्रीय साक्षरता मिशन कार्यक्रम के बुनियादी उद्देश्यों में से एक 'राष्ट्रीय एकता' भी है। मिशन ने अपने कार्यक्रमों के जरिये प्रौढ़ शिक्षार्थियों के बीच राष्ट्रीय एकता की भावना जगाने और फैलाने का काम बड़े पैमाने पर चलाया है। उल्लेखनीय है कि राष्ट्रीय साक्षरता मिशन के इस महत्वपूर्ण उद्देश्य को पूरा करने की दिशा में स्वयंसेवी संगठन भी अपनी सीमाओं में लगातार सहयोग दे रहे हैं।

भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ ने हिन्दी भाषा के नवसाक्षर पाठकों की जरूरत और रुचियों को ध्यान में रखते हुए, अन्य विषयों के साथ ही 'राष्ट्रीय एकता' जैसे विषय पर पहले भी अनेक पुस्तकें प्रकाशित की हैं। निस्सन्देह, 'संघ' द्वारा प्रकाशित नवसाक्षर साहित्य का पाठकों द्वारा स्वागत हुआ है। 'माला के दाने' शीर्षक इस पुस्तक के प्रकाशन

के पीछे भी हमारी यही दृष्टि और भावना है।

राष्ट्रीय एकता को आधार बनाकर लिखी गयी यह पुस्तक 'माला के दाने' एक नाटक है। हमारी जानकारी के अनुसार प्रौढ़ नवसाक्षर पाठकों को नाटक-विधा में लिखी पुस्तकें खासतौर से पसन्द आती हैं। यह भी संयोग की बात है कि 'माला के दाने' पुस्तक एक ऐसा नाटक है जो पढ़ने में शिक्षाप्रद और रोचक तो है ही, मच पर सफलता के साथ खेलने की दृष्टि से भी यह आसान और मनोरंजक है। विश्वास है, हमारे नवसाक्षर पाठकों को मशहूर लेखक द्वारा लिखा गया 'माला के दाने' नाटक पसन्द आयेगा और उनके लिए उपयोगी सिद्ध होगा।

—जे. सी. सक्सेना
मानद महासचिव

भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ
नयी दिल्ली-110002
24 अगस्त, 1989

माला के दाने

पात्र :

सूत्रधार
मानिकचन्द
बंगाली
जौन
रिजवी
शर्मा
रंजन
भोला
साहूकार
चन्द्रशेखर
रामचन्द्रन
स्त्री
सपना

(पर्दा खुलता है। सामने एक पुरानी हवेली का आंगन दिखाई पड़ता है। बीच में हाथ से चलाने वाला नल लगा है। दोनों ओर दो-दो दरवाजे हैं, जिन पर नाम लिखे हैं। सामने बाईं ओर ऊपर जाने वाला जीना है। मंच एकदम खाली है। सूत्रधार और स्त्री का प्रवेश। वे ढपली बजाकर नाचते-गाते आते हैं)

सूत्रधार : सुनो रे सुनो रे सुनो कहानी तुम्हें सुनाते हैं
मिलजुल कर रहने की ताकत हम बतलाते हैं

स्त्री : एक शहर के पास गांव था बड़ा पुराना
वहां खुल गई चीनी की मिल जैसे खुला खजाना

सूत्रधार : हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई बंगाली मदरासी
मिल में काम काज की खातिर बने गांव के वासी

स्त्री : पास गांव के एक बाग में बिल्कुल निपट अकेली
खड़ी हुई थी जमींदार की खाली एक हवेली

सूत्रधार : वही हवेली जमींदार ने हिस्सों में बंटवायी
नकद किराया लेकर मिल के लोगों को उठवायी

स्त्री : जमींदार तो गया शहर को मानिकचन्द कारिन्दा
मालिक बनकर भाड़ा लेता करता गोरखधन्धा

सूत्रधार : सभी हवेली में रहने वाले आपस में लड़ते
छोटी छोटी बातों पर सब मिलकर झगड़ते

स्त्री : मानिकचन्द लड़ाता सबको फिर बन जाता पंच
खूब ऐंठता पैसा सबसे नित करता परपंच

सूत्रधार : जिस दिन भी हो जाता था अंग्रेजी महीना बंद
लेने को मकान का भाड़ा आता मानिकचन्द
(दोनों गाते-बजाते हुए जाते हैं। मंच पर
मंच पर प्रकाश बढ़ता है। हवेली का आंगन
अब साफ दिखाई देता है। मंच पर मानिक
चन्द आता है। वह धोती पर रेशमी कुर्ता
और जाकेट पहने है। सिर पर गुजराती
कामदार टोपी और आंखों पर चश्मा है।
हाथ में चांदी से मढ़ी मूठ वाला छोटा बेंत
है। वह बाईं ओर का पहला द्वार खट-
खटाता है)

मानिकचन्द : (द्वार खटखटाकर) बंगाली बाबू !

बंगाली : (द्वार खोलता है) ओह हवेली का मनीजर
साहेब आइये, आइये—

मानिकचन्द : नहीं नहीं। यहीं ठीक है।

बंगाली : काहे तकलीफ किया ?

मानिकचन्द : ही–ही–ही– बंगाली बाबू ! महीना बंद–
किराया लेने आ गया मानकचन्द !

बंगाली : इतना जल्दी काहे करते हैं। हम किराया

लेकर भाग जायेगा ?

मानिकचन्द : हूं–हूं–हूं– नहीं, नहीं– दरअसल किराया दूसरी तारीख तक जमींदार को भेजना पड़ता है।

बंगाली : ये लो– पूरा एक शौ टका है। निकाल कर अलग रखा है।

मानिकचन्द : जानता हूं जानता हूं।

(मानिकचन्द हर दरवाजे पर दस्तक देता है। सब किराया चुकाते हैं। सभी भूख अभियान करते हैं। सूत्रधार और स्त्री सामने आते हैं।)

सूत्रधार : सब रहते थे एक साथ पर हर पल लड़ते रहते
एक दूसरे को आपस में बुरा भला सब कहते

स्त्री : जड़ें खोदते एक दूसरे की सारे के सारे
देख पड़ोसी को चढ़ते उनके दिमाग के पारे

सूत्रधार : इन झगड़ों की एक झलक हम तुम्हें दिखाते हैं
सुनो रे सुनो रे सुनो कहानी तुम्हें सुनाते हैं
(दोनों गाते-गाते चले जाते है। जौन साहब और रिजवी लड़ते हुए दायीं ओर से प्रवेश करते हैं।)

जौन : रिजवी ! हम चीनी मिल के मैनेजर का टाइप बाबू हैं।

रिजवी : तो मैं भी स्टोर का बाबू हूं। मेरे बिना

कारखाने का पत्ता तक नहीं हिलता।

जौन : तुम दो कौड़ी का आदमी—हमारा बराबरी करेगा।

रिजवी : लोहा पीटने वाले बाबू की औकात ही क्या है ?

जौन : चुप रहो।

रिजवी : तुम चुप रहो। और आइन्दा अपने कुत्ते को बांध कर रखना।

जौन : तुम मुर्गियों को दरबे में रखो—मेरे कुत्ते को मुर्गियों के शिकार का बेहद शौक है।

रिजवी : और मुझे कुत्तों की टांग तोड़ने का शौक है।

रिजवी : गलती किसकी है यह पूरी हवेली जानती है। सब खड़े देख रहे हैं। बंगाली बाबू, बोलते क्यों नहीं ?

बंगाली : हम काहे को बोलेगा। तुम सब लोग हमसे लराई किया। कल जब रामचन्द्रन मद्रासी से हमारा लराई हुआ, तब कोई काहे को नहीं बोला।

मानिकचन्द : सुन लिया मौलाना साहब !

रिजवी : जनाब मैं खुद अपने दम पर लड़ता हूं—मुझे किसी की मदद नहीं चाहिए।

बंगाली : इस हवेली में कोई किसी की मदद नहीं करता।

जौन : मैं भी अपनी ताकत पर लड़ता हूं।

सपना : (भीड़ से आकर) बाबा चलिए, आप यहां क्या कर रहे हैं।

बंगाली : महाभारत देख रहा था। चलता हूं सपना—चल रहा हूं।

मानिकचन्द : आप लोग भी अपने-अपने दरबों में जाइये। चलिए रिजवी साहब !

रिजवी : आप मेरी बात तो सुनिए।

जौन : नहीं पहले आप मेरी सुनिए।

मानिकचन्द : मैं आप दोनों की सुनूंगा—लेकिन पहले अपने-अपने घर जाइये। मैं सबकी बातें अलग-सुनता हूं और अलग-अलग राय देता हूं। चलिए जौन साहब, मैं आ रहा हूं। आइये रिजवी साहब।

(मानिकचन्द रिजवी को लेकर चला जाता है। धीरे-धीरे सब चले जाते हैं)

बंगाली : कारिन्दा का बच्चा ! साला जज बन गया। पहले लराई करता है फिर सुलह करता है। अंग्रेज के माफिक सबको लराई कराकर राज करता है।

सपना : छोड़िए बाबा ! चलिए—नाश्ता कर लीजिए।

बंगाली : चल रहा हूं सपना। अजीब हवेली है। पहले झगरा हुआ फिर एकदम शन्नाटा। जैसे

शब लोग को शाँप शूंघ गया।

सपना : आप घर चलिए बाबा !

(पकड़ कर ले जाती है)

जौन : मैं तुम्हारा मुंह तोड़ दूंगा।

रिजवी : अगर आज से तुमने अपना कुत्ता नहीं बांधा तो यह नेक काम मैं करूंगा।

जौन : मैं तुझे गोली मार दूंगा।

रिजवी : मैं तेरा कीमा बना दूंगा। देखता हूं अब तेरा कुत्ता मेरी मुर्गियां कैसे मारता है। टके का आदमी गज भर की जुबान !

जौन : मैं तेरी जुबान खींच लूंगा।

रिजवी : मैं कहता हूं चुप रहो।

जौन : तुम चुप रहो चूहे कहीं के–

रिजवी : तू चूहा, तेरा बाप चूहा, तेरी सात पुश्त चूहा !

जौन : डेमफूल !

रिजवी : नामाकूल !

जौन : ठहर जा–मैं अभी तुझे बताता हूं।

रिजवी : आगे बढ़ ईसाई के बच्चे !

जौन : मौलाना की दुम—आज तेरी गर्दन तोड़ता हूं।

(दोनों आपस में हाथापाई कर उठते हैं, धीरे-धीरे लोग इकट्ठे हो जाते हैं–बंगाली और शर्मा भी आते हैं पर बोलता कोई नहीं। तभी मानिकचंद का प्रवेश)

मानिकचन्द : हैं–हैं–हैं–अरे इस तरह बिना हथियारों के लड़ाई में मजा नहीं आता।

रिजवी : देख लीजिए कारिन्दा साहब ! एक तो इसके कुत्ते ने मेरी मुरगी हलाल कर दी, ऊपर से लड़ने की हिम्मत !

जौन : अपनी मुरगी को दरबे में रखो।

रिजवी : अपना कुत्ता बांध कर रखा कर !

मानिकचन्द : अरे, अरे, फिर शुरू हो गये।

रिजवी : देखिए न, जब बोलता है कफन फाड़कर बोलता है।

जौन : और यह कब्र फाड़कर बोलता है। मानिक-चन्द जी, यही मुझसे लड़ने आया है। मैंने कोई गलती नहीं की।

(सूत्रधार एवं स्त्री का प्रवेश)

सूत्रधार : सबमें अनबन सब थे दुश्मन चलती थी परिपाटी
रोज हवेली बन जाती थी क्षण में हल्दी घाटी

स्त्री : ऊपर तो शर्मा रहते थे नीचे था बंगाली
दोनों ऐसे लड़ते जैसे हों जाहिल कंगाली

सूत्रधार : इन दोनों की गधा पचीसी तुम्हें दिखाते हैं
सुनो रे सुनो रे सुनो कहानी तुम्हें सुनाते हैं

(दोनों का इधर-उधर प्रस्थान। सपना अपने मकान के आगे धुंआ उठाती अंगीठी रख जाती है। शर्मा आंखें मलता हुआ गुस्से में जीने से उतर कर बंगाली बाबू का द्वार खटखटाता है।)

शर्मा : दास बाबू—दास बाबू हैं ?

बंगाली : (द्वार खोलकर) तूम··शरमा·दास बाबू नहीं है।

शर्मा : क्या मतलब ?

बंगाली : शरमा–तुम्हारे हम घर में नहीं है।

शर्मा : तुम घर में हो या नहीं, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। मैं तो यह कहने आया था कि··।

बंगाली : जब हम तूमशे बात नहीं करता, तब हियां काहे को आया ?

शर्मा : मैं तो खुद तुम्हारे यहां थूकने को भी नहीं आता–लेकिन ··

बंगाली : तब फिर काहे को आया है–हम चिट्ठी तो नहीं दिया।

शर्मा : यह अंगीठी बाहर मत सुलगाया करो।

बंगाली : काहे नहीं शुलगायेगा ?

शर्मा : इसलिए कि ऊपर मेरे कमरे में धुंआं भरता है। कल से यह अंगीठी यहां नहीं रखी जायेगी।

बंगाली : तब फिर हम अंगीठी अपना शिर पर रखेगा क्या ?

शर्मा : हम कुछ नहीं जानता, पर कल से वहां अंगीठी नहीं रखी जायेगी।

बंगाली : जरूर रखेगा—हुंआ ही रखेगा।

शर्मा : (दांत पीसकर) वहां नहीं रखेगा।

बंगाली : तब तुम भी कल से डोंडा मार-मार कर कपरा नहीं धोने शकता। शाला सिर में मूशल के माफिक धोम्म-धोम्म करता है।

शर्मा : हम अपने घर में कुछ भी कर सकता हूं।

बंगाली : कपरा नहीं धोने शकता।

शर्मा : कपड़ा धोना बन्द नहीं होगा।

बंगाली : तब अंगीठी रखना भी बन्द नहीं होगा।

शर्मा : मैं अंगीठी उठाकर फेंक दूंगा।

बंगाली : तुम कपरा धोना बन्द नहीं किया तो हम छत तुड़वा दूंगा।

शर्मा : यह बात है तो कल से अंगीठी रखना। देख लूंगा।

बंगाली : तुम हमको देखेगा—हम भी देखेगा।

शर्मा : धोती से बाहर मत निकलो बंगाली बाबू। चींटी-सी जान और इतनी ऐंठ !

बंगाली : हम चींटी है—तुम हाथी है !—निकल जाओ—निकल जाओ हियां से।

शर्मा : ठीक है जा रहा हूं—अगर कल से यहां अंगीठी रखी तो सारी हेकड़ी निकाल दूंगा। (जाता है)

बंगाली : जरूर रखेगा—शाला शब का शब बदमाश है। हम चीनी मिल का बड़ा बाबू है और शरमा तीन कौड़ी का बाबू ! कल दफ्तर में देखेगा : शाला आंख निकालता है।

(मानिकचन्द आता है और दास बाबू को देखकर उनके पास आता है)

मानिकचन्द : किससे बात कर रहे हैं दास बाबू !

बंगाली : ओह मानिकचन्द जी ! नमस्कार। आप एकदम टाइम शे आया है।

मानिकचन्द : क्या बात है ?

बंगाली : बहुत तकलीफ है।

मानिकचन्द : बताइये, बताइये, अपना तो नाम ही कष्ट-हरन है।

बंगाली : शरमा आज फिर हमशे झगरा किया।

मानिकचन्द : हूंsss फिर किया—कोई बात नहीं। आप जरा मौके का इंतजार कीजिये—मैं शर्मा,

रिजवी और जौन तीनों का पत्ता साफ कर दूंगा ।

बंगाली : हम जानता है । आप हमारा दोश्त है—आप ही देखिए कल हम रिजवी से कुछ नहीं बोला—आज शरमा से भी हमने झगरा नहीं किया । किंतु अब जरूर झगरा करेगा ।

मानिकचन्द : आपको किसी से दबने की जरूरत नहीं है ! मैं आपके साथ हूं ।

बंगाली : हम जानता है किंतु आप कुछ करता काहे नहीं है । जमींदार को बोलकर शरमा और रिजवी को एक तगरा खुराक दिलाय देउ ।

मानिकचन्द : दास बाबू ! जमींदार क्या करेंगे ? आप तो इस हवेली का मालिक हमें ही समझिये—देखते जाइये—वह गोट चलूंगा कि सब मात हो जाएंगे । ही···ही···ही····पर आप भी मेरा ख्याल रखियेगा ।

बंगाली : आप जितना रुपया बोलेगा—हम खरचा करेगा ।

मानिकचन्द : तब वही होगा जो आप चाहेंगे ।

बंगाली : शुनिए—थोरा इस मद्रासी को भी ठीक कर दीजिए । शाला पक्का बदमाश है । इसका आवारा लरका चन्द्रशेखर—एकदम गुण्डा—शाला हमारा शपना के साथ लफरा करता है ।

मानिकचन्द : जानता हूं–सब जानता हूं–इस हवेली में जितने परिवार हैं उतनी आंखें हैं मेरी–सब कुछ देखता हूं–आप बेफिकर रहिये। सब ठीक हो जाएगा।

बंगाली : शपना–शपना !! मानिकचन्द जी के वास्ते रशगुल्ला लाओ।

मानिकचन्द : (दांत फाड़कर) नहीं, नहीं, क्यों परेशान करते हैं बिटिया को !

सपना : (आकर प्लेट देती है) लीजिए खाइये।

बंगाली : शहर से मंगाया है—गांव में तो शिरिफ गुड़ मिलता है।

मानिकचन्द : भई वाह—मजा आ गया !

सपना : एक और लीजिए।

मानिकचन्द : कहती हो तो लेना ही पड़ेगा–वाह (खाकर पानी पीता है) अच्छा ! अब चलता हूं–आप किसी से दबना मत ! (जाना)

बंगाली : अब हम भी एक-एक शाले को देखेगा। भयंकर झगरा करेगा।

सपना : नहीं बाबा ! झगड़ा अच्छी बात नहीं है।

बंगाली : हम झगरा जरूर करेगा।

सपना : बाबा ! आप जानते हैं मेरी मां नहीं है—आप ही मेरे पिता हैं आप ही मां हैं। अगर आपको कुछ हो गया तो··· (सिसकती है)

बंगाली : शपना—ना ना शपना ! अच्छा बाबा–नहीं करेगा–तुम्हारा सिर पर हाथ देकर बोलता है झगरा नहीं करेगा ।

सपना : बाबा ! मेरे अच्छे बाबा !

(दोनों भीतर जाते हैं – द्वार बंद करते हैं– सूत्रधार और स्त्री का प्रवेश)

सूत्रधार : मानिकचन्द ने जादू करके ऐसा मंत्र चलाया
बंगाली दादा का माथा बिल्कुल ही चकराया

स्त्री : रिजवी औ शरमा में देखो नल पर छिड़ी लड़ाई
एक बाल्टी की खातिर होती है हाथा-पाई

(नल पर शर्मा और रिजवी खड़े मूक अभिनय से लड़ रहे हैं । शर्मा लात मारकर रिजवी की बाल्टी हटा देता है । सूत्रधार और स्त्री दोनों जाते हैं ।)

रिजवी : शर्मा ! तुमने मेरी बाल्टी में लात मारी–क्यों?

शर्मा : रिजवी ! जब तक मेरी बाल्टी नहीं भर जाती तब तक तुम अपनी बाल्टी यहां नहीं रख सकते ।

रिजवी : यह नल पूरी हवेली के लिए है फकत आपके लिए नहीं है जो आप सवेरे से नल पर डेरा डाल देते हैं ।

शर्मा : तुम पत्थर से बाल्टी हटा रहे हो या नहीं ?

रिजवी : मैं अपनी बाल्टी इसी पत्थर पर रखूंगा।

शर्मा : यहां रखोगे तो मैं फिर फेंक दूंगा–ऐ ये लो—

(बाल्टी पैर मार कर हटाता है।)

रिजवी : अच्छा ! तो तुमने मेरी बाल्टी फेंक दी। ठहरो मैं तुम्हारी बाल्टी फेंकता हूं।

शर्मा : खबरदार जो मेरी बाल्टी को हाथ लगाया। हट जाओ।

रिजवी : मैं पूछता हूं तुमने पत्थर से मेरी बाल्टी हटाने की हिम्मत कैसे की ?

शर्मा : तुमने पत्थर पर अपनी बाल्टी रखकर मेरी मंजी-मंजाई बाल्टी खराब कर दी।

रिजवी : पत्थर पर मेरी बाल्टी रहने से तुम्हारी बाल्टी खराब हो गयी।

शर्मा : हां, हां, हो गयी।

रिजवी : इतना पाक मानते हो तो गंगा किनारे झोंपड़ा डाल लो—बाल्टी खराब हो गयी–हुं–हटो मुझे भरने दो।

शर्मा : नहीं पहले मेरी बाल्टी भरेगी।

रिजवी : मैं कहता हूं अपनी बाल्टी हटा लो–नहीं तो मैं हटाता हूं।

शर्मा : मेरी बाल्टी छूने की हिम्मत की तो मैं तुम्हारा हाथ तोड़ दूंगा।

रिजवी : अब आगे कुछ कहा तो मैं तुम्हें ठीक कर दूंगा।

शर्मा : तुम, तुम, मुझे ठीक करोगे मैं कहता हूं हट जाओ।

रिजवी : तुम हट जाओ।

शर्मा : नहीं हटोगे तो मैं हटा दूंगा—चाहे मुझे फिर नहाना पड़े।

रिजवी : मेरे बदन से हाथ लगाया तो खून खराबा हो जायेगा शर्मा।

शर्मा : ——चुप रहो।

रंजन : (आकर) पिताजी, यह क्या कर रहे हैं ?

शर्मा : हट जा रंजन ! मैं एक-एक को ठीक कर दूंगा।

रिजवी : मैं तुम्हें ठीक कर दूंगा।

रंजन : उफ् ! आप लोग मेरी बात तो सुनिए।

शर्मा : पानी मैं पहले भरूंगा।

रिजवी : पहले मैं भरूंगा।

शर्मा : देखता हूं कौन पहले भरता है।

रंजन : पिताजी ! बाल्टी मुझे दीजिए—आप ऊपर चलिए मैं बाल्टी भरकर ला रहा हूं।

शर्मा : ठीक है लाता हूं—लेकिन पहले अपनी बाल्टी भरना।

(बड़बड़ाता हुआ जाता है)

रिजवी : पहले मेरी बाल्टी भरेगी।

रंजन : ठीक है भर लीजिए।

रिजवी : मैं दो बाल्टी भरूंगा।

(मानिकचंद का प्रवेश)

रंजन : भर लीजिए, पहले आप भर लीजिए।

मानिकचन्द : भई वाह ! क्या झगड़ा निबटाया है, अच्छा फैसला कर लेते हो रंजन !

रंजन : पर लड़ाने वाले फैसला नहीं मानने देते मानिकचन्द जी।

मानिकचन्द : सब भगवान की कृपा है।

रंजन : नहीं, यह सब आपकी कृपा है मानिकचन्द जी।

मानिकचन्द : काफी समझदार हो--अरे अब जा रहे हो ? पानी नहीं भरोगे।

रंजन : मैं झगड़ा पसंद नहीं करता--एक बाल्टी पानी की बात है मैं बंगाली दादा के यहां से भर लेता हूं। (रंजन जाता है)

मानिकचन्द : क्यों नहीं, क्यों नहीं ? उमर का तकाजा है। बंगाली दादा के यहां-ही ही ही (हंसता है) रिजवी, तुम अभी मुझसे मिलना, तुम्हारे लिए मुझे कुछ करना ही पड़ेगा (कहते हुए जाना)।

(रंजन बंगाली का द्वार खटखटाता है)

सपना : (द्वार खोलकर) कौन ?

रंजन : सपना जी, एक बल्टी पानी चाहिए।

सपना : लेकिन, घर में बाबा नहीं हैं।

रंजन : सिर्फ एक बाल्टी पानी की बात है।

सपना : वह तो ठीक है लेकिन इस हवेली में किसी के यहां आने जाने का रिवाज नहीं है। आप भी यहां न आया करें। खासतौर से जब बाबा घर में न हों।

रंजन : आपने मुझे गलत समझा है सपना जी, मैं चन्द्रशेखर नहीं हूं आप कहती हैं तो मैं फिर कभी नहीं आऊंगा। लेकिन फिर भी मैं आपसे एक बात कहना चाहता हूं।

सपना : कहिये, मैं सुन रही हूं।

रंजन : आप जानती हैं कि इस हवेली के लोग अपने फायदे के लिए एक दूसरे से नफरत करते हैं--लड़ते झगड़ते हैं। हर घर का दरवाजा एक दूसरे के लिए बन्द रहता है। मेरा यहां आने का मतलब यह नहीं था कि मैं इस तरह आपके नजदीक आना चाहता हूं। मैं चाहता हूं कि इस हवेली के हर परिवार में मैं प्यार और सहयोग का संदेश लेकर जाता--सब पड़ोसी प्यार से रहते--दर-असल, यह काम मैं आपके घर से ही शुरू करना चाहता था--लेकिन ....चलता हूं।

सपना : ठहरिये, आप भीतर जाकर अपनी बाल्टी भर लीजिए।

रंजन : धन्यवाद। (भीतर जाता है--सपना वहीं

खड़ी रहती है। तभी सामने वाले घर से चन्द्रशेखर निकलता है और सपना को देखकर सीटी बजाता है। और पास आकर सपना को जीभ दिखाता हुआ दूसरी ओर चला जाता है। सपना मुंह फेर लेती है और तभी रंजन पानी भर कर जाता है)

रंजन : एक बार फिर धन्यवाद सपना जी (जीने की ओर चला जाता है)

(बंगाली का प्रवेश)

बंगाली : (सपना से) यह रंजन काहे आया था ?

सपना : पानी भरने।

बंगाली : मना नाहीं किया।

सपना : आगे के लिए कर दिया है।

बंगाली : ठीक किया—इश का बाप शरमा—बाबा रे बाबा—एकदम राक्षश—

सपना : बाबा !

बंगाली : क्या बात है सपना ?

सपना : चन्द्रशेखर आज फिर सीटी बजाया।

बंगाली : (क्रोध से) क्या ? शाला फिर हरकत—हम उशका सिर तुड़वाय दूंगा—अभी जाता है।

सपना : नहीं बाबा ! अभी वह बाहर गया है। आप उसके बाप को बोलना।

बंगाली : बोलेगा--आज ही बोलेगा।

सपना : अभी चलकर नाश्ता कीजिये--आइये, चलिये।

(सपना बंगाली को भीतर ले जाती है--बंगाली बार-बार चन्द्रशेखर के द्वार को देखता हुआ भीतर जाता है सपना द्वार बन्द करती है।--अंतराल)

मानिकचन्द : (प्रवेश करके) भई वाह, वाह री हवेली! कितने रंग हैं इसमें! अलग-अलग बोलियां, अलग-अलग रूप, अलग जाति धर्म--पर सबका एक ही काम लड़ना, एक दूसरे से झगड़ना। हवेली के मालिक ठाकुर शेरसिंह भी नहीं जानते कि इस हवेली में सब कुछ मेरे इशारे पर चलता है। यह सब किराये दार आपस में लड़ते रहेंगे और मानिकचन्द इन सब पर राज करता रहेगा (हंसता है)।

रिजवी : (जीने से नीचे आता है) अरे मानिकचन्द जी--आप यहां? मैं कब से आपको ढूंढ़ रहा था।

मानिकचन्द : क्या बात है रिजवी साहब?

रिजवी : आपने इस जौन के बच्चे का कोई इलाज नहीं किया?

मानिकचन्द : आप बेफिकर रहिये--जब तक मैं इस हवेली

में हूं आपका कोई बाल बांका तक नहीं कर सकता। मैं उस ईसाई बाबू को चकरघिन्नी बना दूंगा। (मूंछें ऐंठता है)

रिजवी : साला अपने को न जाने क्या समझता है।

मानिकचन्द : रिजवी साहब ! इस हवेली में सब बावन गज के हैं। लेकिन मैं भी अट्ठावन गज का हूं।

रिजवी : आप ठीक फरमाते हैं। (धीरे से) यह सब बगल वाला बंगाली दास भी पूरा चिड़ी का गुलाम है। कल खामखा मेरे से लड़ पड़ा और आज तो रामचन्द्रन से जमकर लड़ा है।

मानिकचन्द : मुझे सब पता है। बंगाली पूरा अकड़ू पीर है। लेकिन आप चिन्ता मत कीजिये। जौन को मैंने फटकार दिया है। बंगाली को भी सीधा कर दूंगा। मेरा मारा पानी नहीं मांगता।

रिजवी : आप दादा वाला हिस्सा मुझे दिलवा दीजिए—उसे निकालिये। उसका घर अच्छा है।

मानिकचन्द : हूंss लेकिन उसके लिए—हो-हो-हो—पूजा के लिए परशाद चाहिये।

रिजवी : मैं आपको पूरी फीस दूंगा।

मानिकचन्द : तब दादा का घर आपको मिलेगा—बस आप तो तेल देखिये और तेल की धार देखिए !

रिजवी : बस आप जौन और बंगाली दादा को हवेली से निकाल दीजिए और बंगाली वाला घर मुझे दिला दीजिए–मैं आपकी खातिर कर दूंगा।

मानिकचन्द : सब होगा––बस मौके का इंतजार करिए–ही-ही-ही–

(रिजवी जाता है)

मानिकचन्द : एक अनार सौ बीमार ! शर्मा, जौन, रिजवी और वह मद्रासी रामचन्द्रन सब बंगाली वाला मकान चाहते हैं। अच्छा पैसा बनेगा। किसी हिकमत से अगर यह बंगाली निकल जाय तो……ही-ही-ही।

भोला : (आकर) अरे मालिक आप यहां ! मैं उधर देख रहा था।

मानिकचन्द : अरे भोला के बच्चे, तू कहां मर गया था !

भोला : गांव गया था मालिक।

मानिकचन्द : गांव ! इस बखत––क्यों गया था रे ?

भोला : पढ़ाई करने मालिक !

मानिकचन्द : क्या पढ़ाई ? कैसी पढ़ाई ?

भोला : रंजन भइया सरपंच की चौपाल पर गांव के अनपढ़ लोगों को पढ़ाते हैं। मैं भी वहीं पढ़ने लगा हूं।

मानिकचन्द : अरे वाह! रंजन तो बड़े गुल खिला रहा है।

भोला : बहुत से लोग पढ़ते हैं मालिक–वे किताब देते हैं।

मानिकचन्द : लेकिन तू नहीं पढ़ेगा–तू पढ़ेगा तो हवेली की झाड़-पोंछ कौन करेगा।

भोला : मैं करूंगा मालिक–काम का हरज नहीं करूंगा। लेकिन····· पढ़ूंगा जरूर सरकार !

मानिकचन्द : पढ़कर कलक्टर बनेगा।

भोला : नहीं, आदमी बनूंगा–रंजन भइया कहते हैं।

मानिकचन्द : भाड़ में जा–चाहे जो बन, पर इस बखत मेरा काम कर। आ मेरे साथ।

भोला : चलो मालिक–(दोनों का जाना)

(सूत्रधार का स्त्री के साथ प्रवेश)

सूत्रधार : जमींदार को कब फुर्सत थी आकर देखे-भाले
मानिकचन्द चलता रहता था नित शतरंजी चालें

स्त्री : सब लोगों पर जमा हुआ था कारिन्दा कासिक्का
तभी अचानक लगा एक दिन उसको भारी धक्का

सूत्रधार : बिकी हवेली जमींदार ने रुपया नकद बनाया
खबर सुनी तो मानिकचंद कुछ मन ही मन घबराया।

स्त्री : नये हवेली के मालिक ने प्यादा एक पढ़ाया
एक सवेरे मानिकचन्द से वह खुद मिलने आया

सूत्रधार : नये हवेली के मालिक से तुम्हें मिलाते हैं
सुनो रे, सुनो रे, सुनो कहानी तुम्हें सुनाते हैं

(गाते-गाते दोनों जाते हैं। दुलीचन्द साहूकार का प्रवेश। आकर वह खड़ा हो जाता है और प्यादे के साथ दूसरी ओर से मानिकचंद आता है)

साहूकार : आओ, आओ–तुम्हारा नाम……?

मानिकचन्द : मानिकचन्द सरकार।

साहूकार : मुझे जानते हो ?

मानिकचन्द : जानता हूं सरकार आप शहर के बड़े सेठ हैं।

साहूकार : और क्या जानते हो ?

मानिकचन्द : यह हवेली आपने खरीदी है। इसके नये मालिक हैं।

साहूकार : समझदार लगते हो। देखो मानिकचन्द! मैंने तुम्हें एक खास बात के लिए बुलाया है।

मानिकचन्द : हुकुम करें सरकार।

साहूकार : मैं इस हवेली को तुड़वा कर यहां कोल्ड स्टोरेज बनाना चाहता हूं–गांव के फायदे के लिए।

मानिकचन्द : लेकिन सरकार–यह किरायेदार……।

साहूकार : भइया, इनको निकालना होगा।

मानिकचन्द : तो आप सरकार यह हवेली खाली करवायेंगे?

साहूकार : कैसे समझदार मूरख हो–अरे हवेली खाली नहीं होगी तो कोल्ड स्टोरेज कैसे बनेगा ?

मानिकचन्द : समझ गया सरकार !

साहूकार : यह काम तुम्हें करना है मानिकचन्द ।

मानिकचन्द : (सोचकर) करूंगा, करूंगा सरकार । जब आपने हवेली खरीद ली तो समझ लीजिए मुझे भी खरीद लिया ।

साहूकार : क्या मतलब ?

मानिकचन्द : मेरा पेट इसी हवेली से बंधा है सरकार– यह टूट जायेगी तो मेरी नौकरी .....

साहूकार : नौकरी बनी रहेगी ।

मानिकचन्द : (खुश होकर) तब हवेली चुटकियों में खाली होगी ।

साहूकार : शाबास ! लेकिन किरायेदार आसानी से नहीं छोड़ेंगे ।

मानिकचन्द : मैं सबको नोटिस दिलवाता हूं ।

साहूकार : अगर नोटिस से न छोड़ा तो--।

मानिकचन्द : उनके बाप छोड़ेंगे–(धीरे से) सरकार किरायेदारों में आपस में सिर फुटौवल है । कोई किसी से नहीं बोलता ।

साहूकार : अच्छा !

मानिकचन्द : हां सरकार–सब एक-दूसरे से जलते हैं– जलन की खातिर खूब लड़ते हैं । बड़े गुर की बात है सरकार--।

साहूकार : क्या ?

मानिकचन्द : अगर किरायेदारों को बस में रखना है तो लड़ाते रहो।

साहूकार : हूंss—बड़े काम के आदमी हो।

मानिकचन्द : पांव की जूती हूं सरकार !

साहूकार : ठीक है तुम हवेली खाली करवाओ—इसका अलग से तुम्हें इनाम दिया जायेगा।

मानिकचन्द : सरकार नोटिस दिलवाता हूं—नोटिस की मियाद खतम हुई और हवेली खाली।

साहूकार : न हुई तो ?

मानिकचन्द : होगी सरकार। मैं हर तरह से घी निकालना जानता हूं। ऐसा मंतर मारूंगा कि सांप मर जायेगा और लाठी नहीं टूटेगी। (धीरे से) मैंने किराये नामा किसी को नहीं दिया, जब चाहूं तब सबको कान पकड़कर निकाल सकता हूं। बस नोटिस की मियाद पूरी होने की देर है।

साहूकार : ठीक है, तुम नोटिस दिलवा दो।

मानिकचन्द : इस काम के लिए अभी जाता हूं सरकार।

साहूकार : सुनो, पुलिस में यह बात नहीं जानी चाहिए।

मानिकचन्द : नहीं सरकार ! मैं धीरे-धीरे एक एक को निकालूंगा, बाकी तो अपने आप डरकर भाग जाएंगे। अब सबसे पहले उन बंगाली दादा

दास को निकालना है।

साहूकार : क्यों ?

मानिकचन्द : उससे सब नाराज हैं। कोई नहीं बोलेगा।

साहूकार : ठीक है। तुम अपना काम शुरू करो। अब मैं भी चलता हूं।

(दोनों का जाना)

(सूत्रधार एवं स्त्री का प्रवेश)

सूत्रधार : मानिकचन्द ने बड़े जतन से भारी जाल बिछाया। नोटिस देकर बंगाली बाबू को स्वयं फंसाया।

स्त्री : खतम मियाद हुई नोटिस की मानिकचंद हरषाया।
डंडे वाले गुण्डे लेकर दादा के घर आया।

(दोनों का प्रस्थान। दो लठैतों के साथ मानिकचन्द आता है।)

मानिकचन्द : (द्वार खटखटाकर) बंगाली बाबू।

बंगाली : दरवाजा काहे तोरता है। क्या बात है ?

मानिकचन्द : अरे वाह बंगाली बाबू–तुम तो ऐसे पूछ रहे हो जैसे कुछ जानते ही नहीं। नोटिस की मियाद खतम हो गयी। मुझे मकान की चाबी चाहिए।

बंगाली : चाबी !

मानिकचन्द : हां, हां चाबी ! इसी बखत।

बंगाली : चाबी–कइसे देगा बाबा ।

मानिकचन्द : मकान खाली करके–चलो निकालो सामान ।

बंगाली : हम सामान नहीं निकारेगा ।

मानिकचन्द : तुम नहीं निकालोगे तो हम निकाल देंगे । तुम्हें यह मकान इसी बखत खाली करना पड़ेगा ।

बंगाली : नहीं छोरेगा अपना मकान–पहले हवेली के शब लोग को छोराओ–तब छोरेगा ।

मानिकचन्द : सबसे पहले तुम छोड़ोगे । कुन्दन ! क्या देख रहे हो ? इसका तान तंबूरा निकाल कर बाहर फेंक दो ।

बंगाली : तूम डंडा लेकर गुण्डा लाया–जबरदस्ती करेगा । हम अपना प्रान दे देगा । मकान नहीं छोरेगा । (सामने आ जाता है)

मानिकचन्द : (धक्का देता है । बंगाली गिरता है) परे हट ! कुन्दन, काम शुरू कर ।

सपना : (चीखकर बंगाली को उठाती है) बाबा ! (मानिकचन्द से) तुमने मेरे बाबा को धक्का दिया । (द्वार रोककर खड़ी हो जाती है)

मानिकचन्द : हट जा छोकरी ।

सपना : नहीं हटूंगी । मेरे घर में कोई नहीं घुस सकता ।

(धीरे-धीरे सब इकट्ठे हो जाते हैं और दूर से तमाशा देखते हैं।)

मानिकचन्द : घर क्या तेरे बाप का है ? हट जा नहीं तो सामान के साथ तुम्हें भी बाहर फेंक दूंगा।

बंगाली : हम तुम्हारा जान निकाल लूंगा।

मानिकचन्द : चुप रहो। कुन्दन !—काम शुरू करो।

सपना : कितना अन्याय हो रहा है और आप सब दूर से तमाशा देख रहे हैं !

बंगाली : हम पुलिस बुलाता हय।

मानिकचन्द : कुन्दन ! पकड़ ले इस बंगाली को।

रिजवी : (आगे बढ़कर) बहुत हो चुका मानिकचन्द ! खबरदार जो दादा के बदन को हाथ लगाया।

मानिकचन्द : अरे वाह ! यह बंगाली तुम्हारा सगा कब से हो गया। कल तक तो यह तुम्हारा दुश्मन था।

रिजवी : वह हमारा आपसी मामला था।

मानिकचन्द : और यह कौन सा मामला है ?

रिजवी : यह हम सबका मामला है। दादा का मकान खाली नहीं होगा।

मानिकचन्द : रिजवी साहब ! यह मैं आपके लिए कर रहा हूं।

रिजवी : इसीलिए तुमने मुझे भी नोटिस दिया है।

मानिकचन्द तुम्हारी चाल समझ गया हूं।

मानिकचन्द : मेरी क्या चाल है ?

रिजवी : नया सेठ हवेली खाली कराना चाहता है।

मानिकचन्द : लेकिन मियां तुम बीच में क्यों कूदते हो ? तुमसे तो खाली नहीं करवा रहे।

रिजवी : मैं तुम्हारी चाल समझता हूं। तुम सब को एक-एक करके हलाल करोगे। मैं ऐसा नहीं होने दूंगा। दादा खाली नहीं करेंगे। मैं दादा के साथ हूं।

बंगाली : रिजवी साहब, धन्यवाद ! धन्यवाद !

मानिकचन्द : अब तुम दोनों आज ही खाली करोगे—उलझन ! तुम ऊपर जाकर इस रिजवी के बच्चे का सामान फेंक दो। ऐ छोकरी—परे हट।

सपना : (द्वार में खड़ी होकर) मैं नहीं हटूंगी।

मानिकचन्द : नहीं हटेगी तो (आगे बढ़कर) मैं हटा दूंगा।

रंजन : (आगे आकर) कमीने ! अगर तूने सपना जी को हाथ लगाया तो तेरा हाथ तोड़ दूंगा।

मानिकचन्द : अरे वाह ! तुम्हारे भी पर निकल आए बेटा ! अपने बाप से तो पूछ लो।

शर्मा : (आगे आकर) मैं दादा के साथ हूं।

मानिकचन्द : तुम दादा के साथ हो तो तुम्हारा सामान

भी फेंका जाएगा।

शर्मा : उससे पहले हम लोग मिलकर तुम्हें उठाकर फेंक देंगे।

रिजवी : (सब लोगों से) आप लोग दूर खड़े तमाशा देख रहे हैं ?

शर्मा : यह सबके साथ यही करेगा।

मानिकचन्द : जो मेरे काम में रोड़ा अटकायेगा, उसे आज ही अपना मकान खाली करना पड़ेगा।

बंगाली : हम लोग मकान खाली नहीं करेगा।

मानिकचन्द तुम्हारा बाप भी करेगा। कुन्दन ! लठैतों को भीतर बुला ले।

शर्मा : जुबान संभाल कर बोल मानिकचन्द।

मानिकचन्द : दादा की छोकरी का भूत तुम्हारे सिर पर भी बोलने लगा ?

शर्मा : मेरी बेटी के लिए कुछ कहा तो जुबान खींच लूंगा।

मानिकचन्द : बको मत ! अभी एक-एक को बताता हूं। कुन्दन, जल्दी बुला सबको।

जौन : खबरदार, जो कोई आगे बढ़ा, वरना बन्दूक से भूनकर रख दूंगा।

मानिकचन्द : (घिघियाकर) जौन साहब ! यह बन्दूक है खिलौना नहीं। इसकी नाल उधर कर लीजिए।

जौन : अच्छा तो तुम पहचानते हो इसे–अलग हटो (डांटकर) और तुम लोग हवेली के बाहर जाओ।

मानिकचन्द : लेकिन इन सबसे तो आपकी लड़ाई है।

जौन : हम हवेली के भीतर लड़ते-भिड़ते हैं, पर बाहर वालों के लिए हम एक हैं।

बंगाली : जौन साहेब ठीक बोला–हम सब एक हैं !

समवेत स्वर : हम सब एक हैं–हम सब एक हैं !

रिजवी : जौन साहब जरा बन्दूक दीजिए–मैं इस कमीने का टंटा ही खतम किये देता हूं।

रंजन : दादा मकान को–

सब : खाली नहीं करेंगे।

शर्मा : कोई खाली नहीं करेगा।

मानिकचन्द : (घबराकर) आप–आप लोग मुझे घेर क्यों रहे हैं ?

रिजवी : भाग यहां से–नहीं तो हम तेरा कचूमर निकाल देंगे।

सब एक साथ : मार मार कर भुर्ता बना देंगे।

मानिकचन्द : लेकिन आप सब इस बंगाली के लिए.....

जौन : यह बंगाली का नहीं–हम सबका सवाल है।

रंजन : यह संकट पूरी हवेली का है।

शर्मा : हम संकट के समय एक रहते हैं।

रिजवी : खैरियत चाहता है तो फूट यहां से !

मानिकचन्द : (घबराया सा) जाता हूं–जाता हूं–(जोर से) चलो सब लोग–चलो चलो ।

रंजन : कह देना सेठ से–हम सब एक माला के दाने हैं ।

रिजवी : हमें कोई ताकत तोड़ नहीं सकती ।

(जौन बन्दूक दिखाता है और मानिकचन्द डरकर विंग की ओर भागता है–सब 'हमारी एकता–जिन्दाबाद' के नारे लगाते हैं । लोग अपने-अपने मकानों की ओर नारे लगाते हुए जाते हैं । मंच खाली हो जाता है–तभी सूत्रधार एवं स्त्री का ढपली पर गाते हुए प्रवेश)

सूत्रधार : भागा मानिकचन्द तुरन्त ही लेकर लाठी डण्डे

उसके पीछे-पीछे भागे सब देहाती गुण्डे

स्त्री : मकान खाली करवाने अगर कोई फिर आया

मिलकर सबने आज एकता का त्योहार मनाया

सूत्रधार : आज हवेली जाने से अब मानिकचन्द कतराते हैं

मिलजुल कर रहने की ताकत हम तुमको दिखलाते हैं :

(पर्दा गिरता है)

□ □ □